58

यरूशलेम का विनाश

(24:15-35)

24:15-35 में यीशु ने चेलों के प्रश्नों का उत्तर देना जारी रखा। उसने उन्हें सावधान किया कि जब वे यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखें तो नगर से भाग जाएं (24:15-22)। फिर उसने उन्हें बताया कि उन ''झूठे मसीहों'' की न सुनें, जिन्होंने छुटकारे की पेशकश करनी थी (24:23-28)। फिर उसने मनुष्य के पुत्र के चिह्न (24:29-31) और विनाश के समय (24:32-35) की बात की।

''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को देखकर भाग जाओ'' (24:15-22)

15''इसलिए जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को जिस की चर्चा दानिय्येल
भविष्यवक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो (जो पढ़े, वह समझे), 16तब
जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएं। 17जो छत पर हों, वे अपने घर में से सामान लेने
को न उतरें। 18और जो खेत में हों, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। 19उन दिनों में
जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिए हाय, हाय। 20प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें
जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े। 21क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा
जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा। 22यदि वे दिन घटाए न जाते तो
कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे।''

आयत 15. बहुत से लोग यह सिखाते हैं कि **उजाड़ने वाली घृणित वस्तु** संसार के अन्त में आने वाली है। परन्तु हमें हैरान होने के लिए नहीं छोड़ा गया है कि यह कब होगा, क्योंकि यीशु ने स्पष्ट कर दिया, यह तब होना था जब यरूशलेम और मन्दिर नष्ट किया जाना था। लूका के विवरण में यीशु ने यह कहते हुए स्पष्ट किया, ''जब तुम *यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो,* तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है'' (लूका 21:20)। इसलिए अगली चेतावनियां यरूशलेम में रहने वालों को थीं, जब उन्होंने देखना था कि रोमी सेना निकट आ रही है।

''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' की भविष्यवाणी **दानिय्येल भविष्यवक्ता** के द्वारा की गई थी (दानिय्येल 9:27; 11:31; 12:11)। उसके शब्दों का आरम्भिक रूप में पूरा होना सिल्युसिडों के हाकिम अंतियोकुस चतुर्थ ऐपिफेनिस के दुष्कृत्यों से 168 ई.पू. में पूरा हुआ , जिसने यहूदी मन्दिर में होमबलि की वेदी के ऊपर ज्यूस की काफिर वेदी बना दी और इस पर एक सूअर की बली दी।[1] दानिय्येल के शब्दों का अन्तिम रूप में पूरा होना उस घृणित वस्तु में था, जिसने 70 ई. में यरूशलेम के पतन के चिह्न का काम किया।

यीशु ने कहा कि घृणित वस्तु ने **पवित्र स्थान में खड़ी** होना था, जो कि मन्दिर को कहा गया था (प्रेरितों 6:13; 21:28)। यरूशलेम के विनाश से पहले और उस दौरान होने वाली कई घटनाओं को "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" कहा जा सकता है। यहां पर यहूदी जेलोतेसों की बात हो सकती है जिन्होंने भीतरी आंगनों पर कब्जा करके और लोगों की हत्या करके मन्दिर को अपवित्र कर दिया था।[12] जोसेफस के अनुसार महायाजक अनानुस ने उनके बीच में खड़े होकर कहा, "यकीनन मेरे लिए यह अच्छा [होता] कि परमेश्वर के घर को इतनी घृणित चीज़ों से भरा या इन पवित्र स्थानों को जिन्हें इस प्रकार लताड़ा नहीं जाना चाहिए था, इन लहू बहाने वाले खलनायकों के पैरों से भरा हुआ देखने से पहले मैं मर जाता।"[13] आग से मन्दिर के विनाश के दौरान टाइटस मन्दिर के पवित्र स्थान के अन्दर गया।[14] उसके सिपाही इसकी पवित्र वस्तुएं लूटकर रोम में अपने साथ ले गए; ये घटनाएं टाइटस के आर्क पर लिखी हुई हैं। विजय के जश्न में रोमियों ने बाहरी आंगन में अपने ढंगों के अनुसार बलिदान भेंट करके यहूदी मन्दिर को अपवित्र कर दिया।[15] परन्तु रोमियों के मन्दिर को अपवित्र किए जाने के समय मसीही लोगों के लिए भाग जाने में बहुत देर हो चुकी होनी थी (24:16)।

दिलचस्प बात है कि मरकुस की तरह मत्ती ने कोष्ठक में रखा वाक्य **जो पढ़े वह समझे** बीच में डाल दिया (मरकुस 13:14)। ऐसी समानताएं सुसमाचार के लेखों में साहित्यिक निर्भरता का सुझाव देती हैं कि यह पवित्र आत्मा की अगुआई से लिखे गए हैं। "जो पढ़े वह समझे" दूरदर्शी विश्वासियों को सावधान रहने और उपयुक्त कार्य करने की चुनौती देता है (देखें दानिय्येल 12:10; प्रकाशितवाक्य 13:18)।

आयत 16. यह आयत स्पष्ट कर देती है कि **यहूदिया में** विश्वासियों ने क्या कार्यवाही करनी थी। यरूशलेम में रोमी सेनाओं को आते देखकर (लूका 21:20) उन्होंने अपनी-अपनी जान बचाने के लिए **पहाड़ों पर भाग** जाना था। पुराने नियम के काल में, इस्राएली लोग अपने शत्रुओं से गुफ़ाओं और चट्टानों में छिप जाते थे, जिससे उनके लिए पहाड़ी देश में उन्हें हरा पाना कठिन होता था (न्यायियों 6:2; 1 शमूएल 13:6; 1 राजाओं 18:4; देखें यशायाह 2:19, 21; यिर्मयाह 49:30; यहेजकेल 7:15, 16; 33:27)। दोनों नियमों के बीच के काल में पहाड़ियां से भी मकाबी विद्रोह में शामिल लोगों के लिए सुरक्षा मिलती थी।[16] इस समय यीशु ने अपने चेलों को बचने के लिए पहाड़ों में जाने को भी कहा। क्रेग एस. कीनर ने इस चेतावनी को हमारे लिए इस प्रकार लागू किया है: "यीशु अपने चेलों से इस युग के संकटों को स्वीकार करने और जब सम्भव हो सके तो उनसे बचने की चेतावनी देता है।"[17]

कलीसिया के इतिहासकार यूसबियुस के अनुसार मसीही लोग यरूशलेम से भाग गए और अन्त में यरदन के पार पेला में बस गए।[18] ऐपिफेनियुस ने कहा कि यह भागना यरूशलेम पर रोमियों की घेराबंदी से थोड़ा पहले आरम्भ हुआ था।[19] परन्तु कुछ विद्वानों का पेला की परम्परा पर झगड़ा है।[10] इसके बावजूद जो भी हो यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि यीशु के शब्द यहां पर द्वितीय आगमन से सम्बन्धित नहीं हैं, क्योंकि उस समय कहीं भी जाना सम्भव नहीं होगा।

आयत 17. यीशु ने कहा कि उस समय यदि कोई उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को या यरूशलेम को घिरा हुआ देखे तो यदि कोई **छत** पर हो तो **अपने घर में सामान लेने न** उतरे। फलस्तीन में घरों की छतें चौरस होती थीं। उनका इस्तेमाल अनाज सुखाने (यहोशू 2:6), आराम

करने (1 शमूएल 9:25), पहरा देने के लिए (यशायाह 22:1), और प्रार्थना करने के स्थान (प्रेरितों 10:9) के लिए किया जा सकता था। गर्मियों के मौसम में घरों की छतें रात को वहां चलने वाली ठण्डी हवा के कारण विशेष आनन्द देने वाली होती थीं। आम तौर पर उन पर घर के बाहर लगी सीढ़ी या ज़ीने से चढ़ा जाता था। यीशु कह रहा था कि व्यक्ति अपने घर में जाकर सामान बांधे बिना छत से चला जाए। सामान लेने के लिए समय नहीं था और सामान बांधने से उसके जाने में रुकावट ही पड़नी थी। सुझाव दिया गया है कि नीचे जाने के बजाय जल्दी से भागने के लिए एक छत से दूसरी छत पर कूदा जा सकता था।[11]

आयत 18. इसी प्रकार से, यीशु ने कहा, "**जो खेत में हों, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे।**" प्राचीन लोग आम तौर पर नगरों की चार दीवारी के भीतर रहते थे पर दिन के समय में वे बाहर खेतों में काम करते थे। दिन की गर्मी में काम करते हुए, कपड़ा (*himation*) या "बाहरी वस्त्र" घर पर छोड़ा जा सकता था। सर्दी के मौसम में सफर के लिए कपड़ा आवश्यक होता था और आम तौर पर बाहर सोते समय कम्बल का काम करता था (व्यवस्थाविवरण 24:13; मत्ती 5:40)। आयत 17 की शिक्षा के साथ-साथ यह शिक्षा इस बात का संकेत है कि जीवन छोटी-छोटी बुनियादी आवश्यकताओं से कहीं महत्वपूर्ण है।[12] कपड़ा और दूसरा सामान बदला जा सकता है, परन्तु जीवन दोबारा नहीं मिल सकता।

आयत 19. यह भागना विशेषकर **गर्भवती** स्त्रियों और **दूध पिलाती** स्त्रियों के लिए कठिन होना था। ये स्त्रियां पहाड़ी देश में से तेज नहीं चल सकती थीं और वे बीमार हो सकती थीं, इसलिए रोमी सिपाही उन्हें आसानी से पकड़ सकते थे। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता था और दूध पिलाने वाली स्त्रियों को अपनी आंखों के सामने अपने बच्चों को मरते देखना पड़ सकता था।

कठिन समय नगर के अन्दर रह गई यहूदी स्त्रियों के लिए भी होने थे। क्रूस की ओर जाते हुए यीशु ने यरूशलेम की बेटियों से कहा था, "क्योंकि देखो, वे दिन आते हैं, जिन में कहेंगे, धन्य हैं वे जो बांझ हैं, और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन, जिन्होंने दूध न पिलाया" (लूका 23:29)। बेशक उसके मन में यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश के समय की बात की थी। जोसेफस ने लिखा है कि उन दिनों में "अटारी वाले कमरे स्त्रियों से और अकाल से मर रहे बच्चों से भरे हुए थे।"[13] उसने भूख से मर रही एक स्त्री की दिल दहला देने वाली कहानी लिखी, जिसने अपने ही बेटे को मारकर खा लिया।[14]

आयत 20. यीशु ने आगे कहा, "**प्रार्थना किया करो कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।**" जाड़े में सफ़र करना सर्दी के कारण कठिन होना था। रब्बियों के एक कथन में कहा गया है कि तामूज़ (जून/जुलाई) गर्म है और तेबेथ (दिसम्बर/जनवरी) ठण्डा है, परन्तु निसान (मार्च/अप्रैल) घूमने के लिए अच्छा मौसम है।[15] जाड़े में फलस्तीन में ठण्डे मौसम के अलावा अचानक भारी वर्षा और बाढ़ आ जाती थी। वादियां (सूखी नदियां) पानी से भर जातीं और यरदन में बाढ़ सी आ जाती। कुछ मार्गों पर सफ़र करना अधिक कठिन होता क्योंकि वह पत्थरों और कीचड़ से भर जाते थे, जिससे तेज बारिश से पहाड़ियां बह जातीं।[16]

मत्ती जिसने यहूदी मसीहियों को लिखा, सुसमाचार का अकेला लेखक था, जिसने सब्त के दिन सफ़र की कठिनाई को शामिल किया। यरूशलेम के बहुत से लोग इस दिन सफ़र नहीं

करना चाहते होंगे क्योंकि वे अभी भी व्यवस्था को मानते थे (प्रेरितों 15:1; 21:17, 20)। पारम्परिक रूप में यहूदियों को सब्त के दिन 3/4 मील से कम सफ़र तक करने की अनुमति थी (प्रेरितों 1:12)।[17] कइयों ने सुझाव दिया है कि मसीही लोगों को नहेम्याह के समय की तरह फाटकों के बन्द होने पर सब्त के दिन बाहर जाने में दिक्कत होनी थी (नहेम्याह 13:19–22)। सब्त के दिन दुकानें बंद होनी थीं, जिस कारण विश्वासी लोग रोटी या खाने की कोई और चीज़ खरीद नहीं सकते थे। इसके अलावा यरूशलेम और अन्य स्थानों में अविश्वासी यहूदियों ने भी उन्हें सताना था।

आयत 21. फिर यीशु ने **भारी क्लेश** की चेतावनी दी। यह पृथ्वी पर "अन्त के दिनों" के समय होने वाली भविष्य की किसी घटना की बात नहीं है, बल्कि यह उस बड़े क्लेश की ओर संकेत करती है, जो रोमी सेनापति टाइटस द्वारा यरूशलेम को घेर लेने और उस घेराबन्दी के बाद के परिणाम से वहां के रहने वालों पर आना था, जिसमें नगर पर अन्तिम आक्रमण भी शामिल था।

प्रभु ने उस विनाश को "**जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा**" के रूप में वर्णित किया। क्या यरूशलेम का विनाश नूह के समय की जलप्रलय या मूसा के समय की दस विपत्तियों से भी भयंकर था? क्या यह क्लेश किसी भी युग से जो भविष्य में कभी होना था, भयंकर था? यहां पर इस्तेमाल हुई भाषा को सम्भवतया सामी अतिश्योक्ति के रूप में समझा जाना चाहिए (देखें यिर्मयाह 30:7; दानिय्येल 12:1; योएल 2:2)। यह सुझाव यरूशलेम के विनाश को कम करने के इरादे से नहीं है, जो न्याय के दिन की झलक है।

इन घटनाओं के एक प्रत्यक्षदर्शी जोसेफस ने इस विनाश की बात ऐसे ही शब्दों में की:

> इसलिए मुझे लगता है कि संसार के आरम्भ से लेकर सब मनुष्यों की विपत्तियों की तुलना यदि यहूदियों की इन विपत्तियों से की जाए तो भी काफी नहीं है।[18]
>
> न किसी और नगर ने कभी ऐसी विपत्ति झेली ... संसार के आरम्भ से।[19]
>
> इसलिए उन लोगों की भीड़ जो नष्ट हुई संसार पर मनुष्य या परमेश्वर द्वारा लाए जाने वाले हर विनाश से बढ़कर थी।[20]

उसने दावा किया कि यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश में 11,00,000 लोग मारे गए जबकि 97,000 को बंदी बनाकर ले जाया गया। इनमें से अधिकतर संख्या उन यात्रियों की थी जो फसह मनाने आए थे, जबकि शेष यरूशलेम के रहने वाले थे।[21]

आयत 22. "**यदि वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता।**" यरूशलेम को रोमियों ने चाहे कुछ समय के लिए ही घेरा पर यह घेराबंदी अप्रैल से सितम्बर तक रही। इस घेराबन्दी के कम किए जाने का कारण **चुने हुओं के कारण** था। "चुने हुओं" मसीही लोगों को कहा गया है (22:14 पर टिप्पणियां देखें)। लियोन मौरिस ने टिप्पणी की है, "परमेश्वर के लोग अपने आस-पास के लोगों के लिए कुछ अनुग्रह लेकर आते हैं; अपश्चात्तापी लोगों को चाहे अनन्त उद्धार न मिले पर उनके समाज में चुने हुओं का होना उनका कुछ भला अवश्य करता है।"[22] कलीसिया के आरम्भिक इतिहासकारों का कहना है कि इस विनाश में एक भी मसीही

नहीं मरा क्योंकि उन्होंने यीशु के निर्देशों को समझकर उन्हें मान लिया था।[23]

''झूठे मसीहों पर विश्वास न करना'' (24:23-28)

[23]''उस समय यदि कोई तुम से कहे, देखो, मसीह यहां है! या वहां है तो विश्वास न
करना। [24]क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न, और
अद्‌भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। [25]देखो, मैंने पहिले
से तुम से यह सब कुछ कह दिया है। [26]इसलिए यदि वे तुम से कहें, देखो, वह जंगल में है,
तो बाहर न निकल जाना; देखो, वह कोठरियों में है, तो विश्वास न करना। [27]क्योंकि जैसे
बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना
होगा। [28]जहां लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।''

आयत 23. प्रभु ने स्पष्ट कर दिया कि उसने यरूशलेम के विनाश के दौरान वापस नहीं आना था। उस दौरान मसीहा होने का दावा करने वालों ने यहूदियों को छुड़ाने की पेशकश करते हुए आना था। परन्तु यीशु के चेलों ने उनकी अफवाहों की ओर ध्यान नहीं देना था। लोगों ने दावा करना था, ''**देखो, मसीह यहां है**'' या ''**या वहां है।**'' ये खबरें वास्तविकता पर नहीं, बल्कि झूठी आशाओं पर आधारित होनी थीं। यीशु ने अपने चेलों से ऐसे झूठों को नज़रअन्दाज़ करने को कहा। ''**विश्वास न करना**'' की आज्ञा आयत 26 में दोहराई गई है, जो कहती है, ''विश्वास न करना।''

आयत 24. झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता अपने दावों के समर्थन के लिए **बड़े चिह्न और अद्‌भुत काम** दिखाकर करने वाले थे। ये लोगों को भरमाने के उद्देश्य से किए गए नकली आश्चर्यकर्म होने थे, बहुत कुछ वैसे ही जैसे शमौन मगुअस सामरियों के बीच में करता था (प्रेरितों 8:9–11)। ये चिह्न और अद्‌भुत काम इतने विश्वास दिलाने वाले होने थे कि **चुने हुओं** अर्थात मसीही लोगों **को भी भरमा** सकते थे।

आयत 25. यीशु ने वचन दिया, ''**देखो, मैंने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।**'' आम तौर पर वह अपने चेलों को पहले से तैयार करने के लिए आने वाले खतरों की चेतावनी दे देता था (10:16–39; 16:21; 17:22, 23; 20:17–19; 26:1, 2)। उसने ये चेतावनी इसलिए दी ताकि सबसे कठिन परिस्थितियों में भी वे उसके वफ़ादार रहें।

आयत 26. यीशु ने अपने चेलों से उन खबरों को नज़रअन्दाज़ करने को कहा कि मसीह **जंगल में है।** जोसेफ़स के अनुसार यरूशलेम (और फलस्तीन) में नगर के नष्ट होने से दो दशक पहले कई झूठे नबी थे। उसने देखा कि वे लोगों को जंगल में अपने पीछे लगा लेते थे जहां वे ऐसे चिह्न और अद्‌भुत काम करते, जिन्हें परमेश्वर की ओर से मान लिया जाता।[24]

लोगों की एक आम उम्मीद थी कि मसीहा जंगल में आएगा (देखें प्रेरितों 21:38)। इस प्रसिद्ध विचार से समझ में आ जाता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास इतने लोग क्यों जाते थे और क्यों यहूदी अगुवे उससे पूछते थे कि क्या आने वाला मसीह वही है (3:1, 5; 11:7; यूहन्ना 1:19–28)। रिचर्ड ए. हॉरसले और जॉन एस. हैंसन ने लिखा है:

> लोगों की बड़ी संख्या, परमेश्वर के कार्य के निकट होने से प्रेरित और इस विश्वास

से, अपने काम, घरों और गांवों को खाली कर देती थी कि जंगल में अपने करिश्माई अगुवे के पीछे चल सकें। पवित्र परम्पराओं से उन्हें मालूम था कि परमेश्वर ने आरम्भिक समयों में छुटकारे के चिह्न और अद्भुत काम जंगल में ही दिखाए थे और शुद्ध किए जाने, तैयारी और नये सिरे से आरम्भ करने का स्थान जंगल ही था।[25]

रब्बियों के साहित्य में मसीहा को दूसरे मूसा के रूप में दिखाया जाता है जिसने या तो यहूदिया के जंगल में या यरदन के पार प्रकट होना था।[26]

यीशु ने अपने चेलों से कहा, "**विश्वास न करना**।" वह कह रहा था, "जंगल में झूठे मसीहों के पीछे जाने के लिए बाहर मत जाना।" ऐसे ही एक वचन में यीशु ने कहा, "परन्तु तुम चले न जाना और न उन के पीछे हो लेना" (लूका 17:23)।

जंगल के अलावा यीशु ने इन ढोंगियों के **कोठरियों में** प्रकट होने की बात की। कोठरियां घर के अन्दर वे सुरक्षित निजी स्थान होती थीं, जहां आम जनता से छिपा जा सकता था। पिता से गुप्त प्रार्थना के स्थान को बताते हुए मत्ती में पहले यही यूनानी शब्द *tameion* मिलता है (6:6 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 27. झूठे नबियों के धोखा देने वाले चिह्नों और अद्भुत कामों के विपरीत यीशु ने अपने द्वितीय आगमन का एक वास्तविक और स्पष्ट चित्रण दे दिया: "**क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा**।" उसका "आना" (*parousia*) अंधेरे या गुप्त स्थान में नहीं होगा, बल्कि हर किसी को स्पष्ट दिखाई देगा। यह आसमान में चमकने वाली बिजली की तरह तुरन्त और चमकदार होगा (लूका 17:24)। यूहन्ना ने लिखा है, "देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है, और हर एक आंख उसे देखेगी" (प्रकाशितवाक्य 1:7)। यह बात मत्ती 24:30 में यीशु की भविष्यवाणी से मिलती है।

आयत 28. बहुत सम्भावना है कि यीशु ने जान-बूझकर अपने आने को एक प्राचीन कहावत के साथ प्रकाशमान किया, जिसमें कहा गया है: "**जहां लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे**" (देखें लूका 17:37)। बाज/गिद्ध के सम्बध में अय्यूब 39:30 में ऐसी ही एक बात मिलती है: "जहां घात किए हुए लोग होते हैं, वह वहां पर होता है।" इब्रानी शब्द *nesher* और यूनानी शब्द *aetos* दोनों का अनुवाद या तो "बाज" या "गिद्ध" हो सकता है।

"लोथ" के लिए यूनानी शब्द (*ptōma*) हिंसा से मारे गए के लिए है (14:12 पर टिप्पणियां देखें)। कीनर ने ध्यान दिलाया कि प्राचीन पुस्तकों में आमतौर पर युद्ध में मारे जाने वालोंद की मृत देहों के पक्षियों और कुत्तों द्वारा खाए जाने से भयंकर अंत की बात बार-बार मिलती है।[27] डोनल्ड ए. हैग्नर ने आयत 28 के अर्थ को इस प्रकार लिखा है: "इस कारण जैसा कि तुम जानते हो कि जहां गिद्ध इकट्ठा हुए दिखाई देते हैं, वहां लाश होती ही है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र के आने की बात समझने में तुम्हें देर नहीं लगेगी।"[28]

आयत 28 को मसीह के द्वितीय आगमन से जोड़ने के बजाय कुछ विद्वान इसकी व्याख्या रूपक के रूप में करते हैं। वे "लोथ" को "इस्राएल जाति" को अपनी अन्तिम पीड़ा में जाने की बात कहते हैं। परन्तु इस बात पर कोई एक राय नहीं है कि "गिद्ध" किसे दर्शाते हैं। वे उन झूठे नबियों और झूठे मसीहियों के लिए हो सकते हैं, जिन्होंने अन्तिम घड़ियों में यरूशलेम के

निराश लोगों को पीड़ित किया था। वैकल्पिक अनुवाद ''बाज'' का इस्तेमाल करते हुए एक और विकल्प है कि यह पक्षी रोमी सेना का प्रतीक हैं, जो बाज के चिह्न के साथ आगे बढ़ती थी। एक अन्तिम सम्भावना यह है कि यह परभक्षी आस-पास के इलाके के लोगों का संकेत देते हैं, जिन्होंने यरूशलेम के नष्ट होने के बाद इसे लूट लिया था। ये व्याख्याएं चाहे असम्भव तो नहीं है, पर ऐसा लगता नहीं है कि ये सही हों।

''मनुष्य के पुत्र का चिह्न प्रकट होगा'' (24:29-31)

29''उन दिनों के क्लेश के तुरन्त बाद सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चान्द का
प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई
जाएंगी। 30तब मनुष्य के पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब
कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ
आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। 31वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को
भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं
को इकट्ठे करेंगे।''

क्या हम 24:29-31 की व्याख्या यरूशलेम के पतन के अपोकलिप्टिक विवरण के रूप में करें? इस विचार को मानने वाले लोग यह सुझाव देते हैं कि इन आयतों का अत्यधिक प्रतीकात्मक होना पतन के समय बड़े क्लेश और विनाश को दिखाता है। बाबुल के गिरने (यशायाह 13:10, 19), अदोम के गिरने (यशायाह 34:4), और मिस्र की निराशाओं (यहेजकेल 32:7, 8) के विवरणों में ऐसी ही अपोकलिप्टिक तस्वीरें हैं। इस विचार को मानने वालों का कहना है कि इस हवाले को मसीह के द्वितीय आगमन से जोड़ना अनावश्यक है। इसके अलावा यदि इस हवाले में यरूशलेम के पतन की बात है, तो आयत 34 के साथ यह विचार अधिक चलता है, जो यरूशलेम के गिरने और मसीह की वापसी के बीच की स्वाभाविक रूप में विभाजित करने वाली बात लगती है।

तौभी यह विचार कि 24:29-31 मसीह के द्वितीय आगमन से सम्बन्धित है, इससे अधिक सराहता है। पिछली आयतों (24:27, 28) की तरह यीशु ने अपने आगमन का वर्णन एक ऐसी घटना के रूप में किया, जिससे किसी ने चूकना नहीं था यानी इसे हर कोई देखेगा। इसके अलावा जैसा कि अन्य आयतों में दिखाया गया है मसीह की वापसी में ''स्वर्गदूत,'' एक बड़ी तुरही, और ''चुने हुए लोग'' प्रमुख होंगे। झूठी अफ़वाहों के उलट उन्होंने मसीहा के आने की बात सुननी थी, यीशु ने चाहा कि उसके चेलों को सच्चाई पता चले।

आयत 29. क्रिया-विशेषण **तुरन्त** (*eutheōs*) कठिन है। स्पष्टतया इस आयत वाली घटनाएं (**सूर्य** और **चांद** का अन्धियारा होना और **तारों** का गिरना) यरूशलेम नगर पर आने वाले **क्लेश के बाद** नहीं हुआ था। इसके अलावा उस समय मसीह वापस नहीं आया, और न ही अभी तक आया है, जबकि दो हज़ार साल बीत चुके हैं।

कई बिन्दुओं पर विचार किया जाना आवश्यक है: (1) ''तुरन्त'' की व्याख्या आयत 36 के प्रकाश में होनी चाहिए, जहां यीशु ने कहा कि उसकी वापसी के समय को कोई नहीं जानता ''पर

केवल पिता'' यह बात संकेत देती है कि वह आयत 29 वाली घटनाओं का कोई पक्का समय नहीं दे रहा था। (2) इस आयत में अपोकलिप्टिक रूपक है, जिसे सम्भवतया अक्षरश: नहीं लिया जाना चाहिए। इससे जुड़ा एक उदाहरण प्रेरितों 2:15-21 में मिलता है। वहां पर पतरस ने कहा, कि योएल 2 की भविष्यवाणी, जिसमें ऐसा ही रूपक है, पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई थी। यह सच था चाहे सूर्य सचमुच में अन्धियारा नहीं हुआ था और न ही चांद लहू में बदला था। (3) ''तुरन्त'' इस प्रकार लगता है कि जैसे ''भविष्यवाणी के अगले भाग के छोटे होने'' के रूप में जाना जाता है। कई बार भविष्यवक्ता दो घटनाओं को एक-दूसरे के इतना निकट दिखाते हुए वर्णन करते जबकि वास्तव में वे एक-दूसरे से बहुत दूर होती थी। यह तथ्य कि इस अध्याय में आरम्भ और युग के अन्त की चर्चा हो रही है, संकेत देता है कि दोनों में एक निकट धर्मशास्त्रीय सम्बन्ध है। दोनों ही यीशु की सेवकाई का पूरा होना हैं। दोनों में न्याय की बातों जो उसे परमेश्वर का अपने लोगों के लिए सच्चा और अन्तिम संदेश घोषित करेगा।[29]

आयत 30. यीशु के चेलों ने पूछा था, ''तेरे आने का क्या *चिह्न* होगा?'' (24:3)। यहां पर प्रभु ने उनके प्रश्न का उत्तर दिया: **मनुष्य के पुत्र का चिह्न** स्वयं द्वितीय आगमन होगा। अचानक और बिना उम्मीद किए मसीह परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर आएगा। जंगलों और कोठरियों में झूठे मसीहियों के गुप्त में मिलने के विपरीत उसका प्रकट होना दिखाई देने वाला और सबको सुनाई देने वाला होगा (मरकुस 13:26; लूका 21:27; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16; प्रकाशितवाक्यों 1:7)। उसकी उपस्थिति पर पृथ्वी के बिना तैयारी वाले लोग **छाती पीटेंगे। पृथ्वी के सब कुलों के लोग** में निश्चित रूप में वे लोग नहीं हैं, जो प्रभु के आने की राह देख रहे और प्रार्थना कर रहे हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 16:22; 2 तीमुथियुस 4:8)। उसका आना **बड़ी सामर्थ और एश्वर्य के साथ** होगा। **मनुष्य के पुत्र के आकाश के बादलों पर** के आने का रूपक दानिय्येल 7:13, 14 से लिया गया है, जो मसीह के अधिकार और शासन पर ज़ोर देता वचन है।

आयत 31. तुरही की आवाज़ की व्याख्या आने वाले न्याय की चेतावनी के रूप में की गई है; परन्तु तब लोगों के लिए बहुत देर हो चुकी होगी कि वे मन फिराएं। इसके बजाय तुरही का इस्तेमाल धर्मियों को इकट्ठा करने के लिए किया जाएगा (देखें यशायाह 27:13)। पौलुस ने कहा कि ''तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:52); ''क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।

''तुरही'' के लिए यूनानी शब्द (*salpinx*) का इस्तेमाल सप्तत्ति अनुवाद में इब्रानी शब्दों *shopar* और *ch^{a}tsots^{e}rah* के अनुवाद के लिए किया गया है। *Shopar* बहुत सम्भव मेंढ़े का सींग होता था जबकि *ch^{a}tsots^{e}rah* तीखे सिरे वाली एक लम्बी, सीधी धातु की नली होती थी।[30] यहां दोनों में से कोई भी यन्त्र हो सकता है।

यीशु ने कहा कि उसके **स्वर्गदूत ... उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे**। उसकी ईश्वरीयता इस तथ्य में देखी जाती है कि उसके पास स्वर्गदूतों को भेजने और परमेश्वर के विश्वास योग्य लोगों को इकट्ठा करने का अधिकार है। जंगली बीज के दृष्टांत और जाल के दृष्टांत में भी यीशु ने बताया था कि उसके दूतों को युग के अन्त में धर्मियों को अधर्मियों से अलग करने का काम

दिया जाएगा (13:41, 42, 49, 50)।

यहूदियों का मानना था कि वे चुने हुए लोग हैं, जिन्हें पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठे किया जाएगा (व्यवस्थाविवरण 30:4; यशायाह 11:12; 43:5; 49:5; 56:8)।[31] यह उम्मीद शेमोने एसरेह (अठारह आशीष वचनों) नामक यहूदी प्रार्थना में दर्शाई जाती है। दसवां आशीष वचन है, ''हमारी स्वतन्त्रता के लिए बड़ी शोपर बजाओ और हमारे निर्वासितों को इकट्ठा करने के लिए झण्डा उठाओ और पृथ्वी के चारों दिशाओं से हमें इकट्ठा करो। तू धन्य है हे यहोवा, जो अपने लोग इस्राएल के बिखरे हुओं को फिर से इकट्ठा करता है।'' आयत 31 में चाहे ''चुने हुओं'' शब्द में विश्वास योग्य इस्राएली हो सकते हैं, जो पुरानी वाचा के अधीन रहते थे, पर निश्चित रूप में यह नई वाचा के अधीन विश्वासयोग्य मसीही लोगों के लिए कहा गया है। इस अध्याय में इस शब्द का इस्तेमाल यीशु के अनुयायियों को दर्शाने के लिए दो और बार किया गया है (24:22, 24)।

स्वर्गदूत **चारों दिशाओं से** चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे। यह पूरी पृथ्वी की बात करने का एक प्राचीन ढंग था जिसमें चारों दिशाएं आती हैं (देखें यिर्मयाह 49:36; यहेजकेल 37:9; दानिय्येल 7:2; 8:8; जकर्याह 2:6; प्रकाशितवाक्य 7:1.) इसका अर्थ था **आकाश के इस छोर से उस छोर तक।**

''यरूशलेम का विनाश इसी पीढ़ी में होगा'' (24:32-35)

[32]''अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो: जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म काल निकट है। [33]इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है। [34]मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी का अन्त नहीं होगा। [35]आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।''

आयत 32. स्पष्टतया यहां पर यीशु यरूशलेम के विनाश के विषय पर लौट आया। **अंजीर के पेड़** के उसके दृष्टांत की बात स्पष्ट है। वह यह मान रहा था कि लोग प्रकृति के कुछ चिह्नों को देखकर मौसम के बदलने की बात तय कर सकते हैं। बसंत के समय अंजीर के पेड़ में रसीले फूल और **उसकी डाली** [या] **कोमल हो जाती हैं। उसके पत्ते** निकलना इस बात का प्रमाण था कि **ग्रीष्मकाल निकट** था (21:19 पर टिप्पणियां देखें)। मसीह उनसे जो प्रकृति के चिह्नों को देखकर मौसम का पता लगा सकते थे, कह रहा था कि उन्हें यरूशलेम के विनाश के आने से आत्मिक चिह्नों की समझ आनी चाहिए।

आयत 33. यीशु ने अपने चेलों से कहा, **''इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है।''** ''वह निकट है'' वाक्यांश NASB में इस आयत को मसीह के द्वितीय आगमन से सम्बन्धित हवाला दिखाता है। NLT से यह और स्पष्ट हो जाता है, जहां कहा गया है कि ''उसकी वापसी बहुत निकट है।'' मूल धर्मशास्त्र का अनुवाद ''यह निकट है'' (KJV; NIV) या ''समय निकट है'' (JNT) भी हो सकता है। इस अनुवाद को संदर्भ से बेहतर समर्थन मिलता है। ''यह'' शब्द ''ग्रीष्मकाल'' के लिए हो सकता

है (24:32), जब यरूशलेम का घिरना हुआ।[32] जोसेफस के अनुसार मन्दिर का विनाश 70 ई. में आब (जुलाई/अगस्त) की दस तारीख को हुआ था।[33]

आयत 34. यीशु ने आगे कहा, **''मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।''** इस आयत की व्याख्या कैसे की जाए? इसकी व्याख्या ''पीढ़ी'' और ''ये सब बातें'' शब्दों के अर्थ पर टिकी है। क्या हम ''पीढ़ी'' (*genea*) शब्द की व्याख्या ''यह लोग'' अर्थात यहूदी जाति के लिए कर सकते हैं? इस विचार को मानने वालों का मानना है कि यीशु यह प्रतिज्ञा कर रहा था कि यहूदी जाति उसकी वापसी से पहले खत्म नहीं होगी। परन्तु जैसा कि जैक पी. लुईस ने ध्यान दिलया है:

> *Genos* (जाति) और *genea* (पीढ़ी) में अन्तर है। ... मत्ती में कहीं पर *genea* का अर्थ एक समय में जीवित लोग हैं और आम तौर पर यीशु के समय में (1:17; 11:16; 12:39, 41, 45; 23:36; मरकुस 8:38; लूका 11:50 से; 17:25) और बेशक इसका अर्थ यहां पर यहीं है। मन्दिर का गिरना एक पीढ़ी के बीत जाने से पहले होना था।[34]

आयत 34 में ''ये सब बातें'' स्वाभाविक रूप में (यदि व्यापक संदर्भ का संकेत नहीं हैं) आयत 33 वाली ''बातों'' के लिए ही हैं। इसका अर्थ है कि इस वचन में पहले वर्णित की गई घटनाएं पूरी होनी थीं। ''ये सब बातें'' अध्याय के आरम्भ की बातें हो सकती हैं जहां प्रभु का संदेश मन्दिर के विनाश के उसकी भविष्यवाणी के साथ आरम्भ हुआ और चेलों के प्रश्न के साथ कि वे ''बातें'' कब होनी थीं (24:2, 3) आरम्भ हुआ। आयत 36 कहती है कि पिता के सिवाय ''कोई नहीं जानता'' की यीशु कब आएगा, इसलिए ''ये सब बातें'' में द्वितीय आगमन की बात नहीं है।

आयत 35. यीशु ने पहले ही अपने द्वितीय आगमन और संसार के अन्त की भविष्यवाणी कर दी थी (24:29–31) और यहां वह इसी सच्चाई की फिर से पुष्टि कर रहा था कि **आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे**। अन्य आयतें इसी शिक्षा पर बल देती हैं (2 पतरस 3:7, 10–12)। पृथ्वी और इसमें के काम थोड़ी देर के हैं जबकि प्रभु का वचन सदा तक रहने वाला है (1 पतरस 1:24, 25)। जब यीशु ने यह कहा कि **''मेरी बातें कभी न टलेंगी''** तो वह इस संदेश में अपनी भविष्यवाणियों के पक्का होने की बात दोहरा रहा था।

टिप्पणियां

[1]1 मक्काबियों 1:47, 54, 59; 2 मक्काबियों 6:1–11; जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 12.5.4. [2]जोसेफस *वार्स* 4.3.7, 10; 4.5.4; 5.1.3. [3]वही, 4.3.10. [4]वही, 6.4.7. [5]वही, 6.6.1. *ज़ौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* सम्पा. क्लिंटन ई. आरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन, 2002), 148 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू'' में बाज और सूअर के रोमी चिह्नों को देखें। [6]1 मक्काबियों 2:28. [7]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 573. [8]यूसबियुस *एक्लेसियस्टिकल हिस्ट्री* 3.5.3. [9]एपिफेनस *अगेंस्ट हेयरसीज़* 29.7.7. [10]देखें विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 858.

[11]देखें जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 13.5.3. [12]मक्काबियों के विद्रोह के दौरान मथियास और उसके पुत्र "पहाड़ों में भाग गए और अपना सब कुछ नगर में छोड़ गए थे" (1 मक्काबियों 2:28; NRSV)। [13]जोसेफस *वार्स* 5.12.3. [14]वही, 6.3.4. [15]*नम्बर्ज़ रब्बाह* 3.6. [16]देखें मिशनाह *टानिथ* 1.3. [17]मिशनाह *एरुबिन* 4.3; 5.7. [18]जोसेफस *वार्स* प्रिफेस 4. [19]वही, 5.10.5. [20]वही, 6.9.4.

[21]वही, 6.9.3. [22]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 606. [23]यूसबियुस *एक्लेसियस्टिकल हिस्ट्री* 3.5.3; एपिफेनियुस *अगेंस्ट हेयरसीज़* 29.7.7. [24]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 20.5.1; 20.8.6, 10; *वार्स* 2.8.1; 2.13.4, 5; 4.9.3–5. [25]रिचर्ड ए. हॉरसले एंड जॉन एस. हैन्सन, *बैंडिट्स, प्रोफेट्स, एंड मसायाह: पापुलर मूवमेंट्स इन द टाइम ऑफ़ जीज़स,* न्यू वॉयसस इन बिब्लिकल स्टडीज़, 2 (न्यू यॉर्क: विन्सटन प्रैस, 1985), 162. [26]*नम्बर्स रब्बाह* 11.2; *सौंग रब्बाह* 2.9. [27]कीनर, 583. देखें होमेर *इलियाड* 11.395, 454; 22.42, 43, 335–36, 353; 24.411; *ओडिसे* 3.258–60. [28]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 707. [29]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 334. [30]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू एंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामेंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 348.

[31]*साम्स ऑफ़ सॉलोमन* 8.28; 11.2–5; 17.26; *4 एज्रा* 13.39–50; *टैस्टामैंट ऑफ़ आशेर* 7.7. [32]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 129. [33]जोसेफस *वार्स* 6.4.5. यिर्मयाह 52:12 के अनुसार सुलैमान का मन्दिर इसी दिन "पांचवें महीने के दसवें दिन" नष्ट किया गया था।" मिशनाह दोनों मन्दिरों के विनाश को आब के दसवें दिन बताता है। (मिशनाह *टानिथ* 4.6.) [34]लुईस, 129–30.